

Enviornment Pedagogy

पर्यावरण शिक्षण शास्त्र

**Most Important CTET, MPTET, UPTET,
REET and all State TET Exams**

By - नितिन गुप्ता

Hello Friend , I am नितिन गुप्ता From – Nitin-Gupta.com

आज की हमारी PDF **Enviornment Pedagogy** बिषय से संबंधित है , जो कि आपको CTET, MPTET Samvida Exam, UPTET, REET, HTET व अन्य State TET व Teaching Exmas के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी !! इस PDF को First Rank Publications द्वारा तैयार किया गया है !!

ऐसी ही PDF के लिये Google पर Search करें – “Nitin Gupta PDF”

For Best PDF, Search on Google - "Nitin Gupta PDF"

Free Download All Subject PDF

आप नीचे दिये Link से संबंधित Subject की सभी PDF को Download कर सकते हैं



Nitin Gupta Notes



Current Affairs PDF



Maths PDF



Reasoning PDF



History PDF



Gepgraphy PDF



Economics PDF



Polity PDF



Science PDF



Computer PDF



Environment PDF



General Hindi PDF



General English PDF



Child Development and Pedagogy PDF



MP GK PDF



UP GK PDF



Rajasthan GK PDF

पर्यावरण शिक्षण

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है- परि+ आवरण। परि का अर्थ चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है- ढकने वाला। इस प्रकार कहा जाता है कि व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ भी है वह उसका पर्यावरण है। पर्यावरण प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों से मिलकर बना है।

पर्यावरण की परिभाषाएँ :-

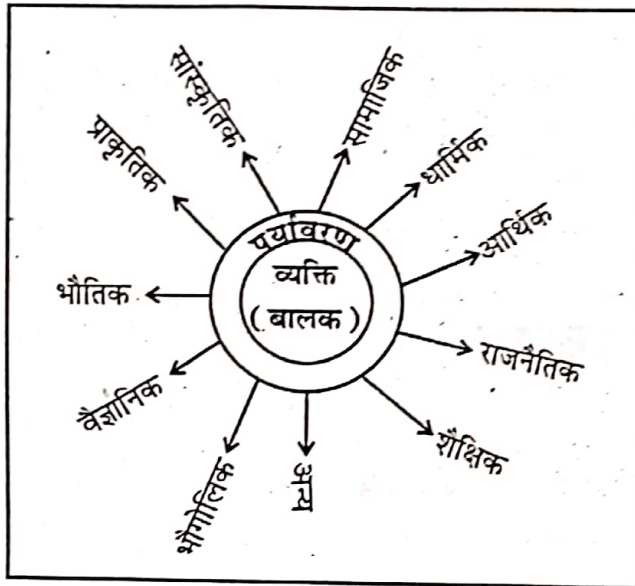
- ☛ "पर्यावरण में वह सब कुछ है जो किसी व्यक्ति को चारों ओर से घेरे हुए हैं एवं उन पर सीधा प्रभाव डालता है।" - निम्बर्ट। [RPSC T.Ex. (III Gr.)-2004]
- ☛ "कोई भी बाहरी शक्ति जो हमें प्रभावित करती है, पर्यावरण होती है।" - रॉस।
- ☛ "पर्यावरण में वे तत्त्व आते हैं जिन्होंने व्यक्ति को जीवन आरंभ करने के समय से प्रभावित किया है।" - वुडवर्थ।

क्या आप जानते हैं?

- (1) शिक्षण प्रणाली के माध्यम से - क्षेत्रीय भ्रमण विधि।
- (2) सामाजिक मूल्यों के विकास में सबसे अधिक योगदान सामाजिक अध्ययन का होता है।
- (3) वाद-विवाद विधि प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं सिद्धांतों का अनुसरण करती है।
- (4) प्राथमिक कक्षाओं में सामाजिक अध्ययन पढ़ाने की सर्वोत्तम विधि कहानी विधि है।

पर्यावरण अध्ययन की संकल्पना

- बालक जितना अधिक सामाजिक पर्यावरण से सीखते हैं उतना अन्य से नहीं।
- बालकों को प्राकृतिक पर्यावरण का निरीक्षण करने का पूर्ण अवसर देना चाहिए और जो कुछ वह देखें व अनुभव करें उसे लिखवाना चाहिए।



- इससे सामाजिकता सम्बन्धी बहुत-सा ज्ञान व्यावहारिक एवं वास्तविक रूप से वे प्राप्त कर लेंगे।
- “पर्यावरणीय अध्ययन का अर्थ है व्यक्ति या बालक के चारों ओर के व्याप्त वास्तविक पर्यावरण का अध्ययन करना जिनसे प्रभावित होकर वह विभिन्न क्रियाएँ अपने सम्पूर्ण जीवन में करता रहता है।”

पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

- पर्यावरण में भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक तथा राजनैतिक रूप में विचार किया जा सकता है।
- पर्यावरण शिक्षा औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों रूपों में चल सकती है।

- पर्यावरण शिक्षा का प्रत्यय अन्तः अनुशासन आयाम पर आधारित है। पर्यावरण के सभी विषयों पर महत्व दिया जाता है।
- पर्यावरण शिक्षा में सक्रिय भागीदारी पर बल दिया जाता है।
- पर्यावरण की समस्याओं का आंकलन, स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक दृष्टि से किया जाता है।
- पर्यावरण की जटिलता को समझना तथा समस्या के समाधान की क्षमता एवं विश्लेषणात्मक चिन्तन का विकास करना है।
- शिक्षण के विभिन्न प्रतिरूपों, पर्यावरण के विभिन्न (आयामों) को समझाना तथा स्पष्ट करना है।
- समस्याओं के समाधान हेतु अन्तःअनुशासन आयाम का उपयोग करना उचित है।
- शैक्षिक योजना एवं कार्य-प्रणाली की प्रभावशीलता के मूल्यांकन के लिए मानदण्डों का विकास करना है।
- जाम्बी सेमिनार यूनेस्को 1976 में इस प्रकार परिभाषा की गई- “पर्यावरण शिक्षा एक विधि है जिससे पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाएगा। विज्ञान तथा अध्ययन के क्षेत्र की पृथक् शाखा नहीं है अपितु जीवन पर्यन्त चलने वाले सिद्धान्तों के अनुसार एकीकृत शिक्षा के रूप में चलाना चाहिए।”

पर्यावरण शिक्षा का विभिन्न स्तरों पर क्षेत्र

1. प्राथमिक स्तर- दीर्घ निरीक्षण विधि, खेल, पर्यटन, नगरीय, योजना
 - 75% पर्यावरण चेतना का शिक्षण
 - 20% जीवन की पारिस्थितियों से सम्बन्धित
 - 5% संरक्षण की जानकारी
- स्थान- घर, विद्यालय, सहायक सामग्री-दृश्य-श्रव्य सामग्री
- निरीक्षण विधि-खेल विधि, पर्यटन, नाटक, योजना विधि।

2. पाठ्यक्रम व्याख्यान, योजना, प्रश्नोत्तर, पर्यटन, नाटकीय-

- संरक्षण को महत्त्व।
- निरीक्षण में परिपक्वता।
- समस्याओं की पहचान।
- कौशलों का विकास।

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य-

- बालक को उसके पर्यावरण और उसके आवासीय स्थान के विषय में सचेत करना।
- उसमें उसके चारों ओर रहने वाले लोगों के प्रति रुचि उत्पन्न करना और पर्यावरण हेतु सृज उत्पन्न करना।
- पर्यावरण को समझने हेतु कौशलों को विकसित करना।
- पर्यावरण की सुरक्षा हेतु व्यक्तिगत एवं सामूहिक तौर पर कार्य करने की इच्छा-शक्ति उत्पन्न करना।
- अधिगमकर्ताओं में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पल्लवित करना।

माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य-

- शिक्षार्थियों का पर्यावरण के साथ व्यापक सम्पर्क विस्तृत करना और इसके संदर्भ में प्राणी की स्थिति के मूल्य-निर्धारण को विकसित करना।
- पर्यावरणीय कुप्रवन्धन पर लघु एवं दीर्घकालीन प्रभावों के तथ्यात्मक ज्ञान का अध्ययन करने हेतु उत्प्रेरित करना।
- पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पुनः सशक्त करना और पर्यावरण को उन्नत करने हेतु अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को समझना।
- शिक्षार्थियों को इस रूप में तैयार करना कि वे पर्यावरण की विस्तृत जानकारी द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व वहन करते हुए समाज में सन्तुष्टि से अपना जीवन निर्वाह कर सकें।
- पर्यावरण की सदा विकसित होने वाली स्थिति के ज्ञान हेतु शिक्षार्थियों में कौशलों का विकास करना ताकि वे आँकड़े एकत्रित एवं वर्गीकृत

कर, तुलना एवं अंकन द्वारा समस्याओं को पहचान सकें और उचित निर्णय लेने योग्य बन सकें।

शिक्षण की समस्याएँ

1. पाठ्यक्रम का सुव्यवस्थित न होना।
2. पर्यावरण अध्ययन को पर्यटन विधि/भ्रमण विधि द्वारा बेहतर तरीके से पढ़ाया जा सकता है लेकिन सभी तरह के परिवेश में इस विधि का प्रयोग नहीं हो पाता है।
3. विद्यालयों में पर्यावरण अध्ययन को पढ़ाने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।
4. पर्यावरण अध्ययन विद्यालयों में निश्चित पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाया जाता है किन्तु छात्रों के निजी अनुभवों को पाठ्यक्रम में स्थान नहीं दिया जाता है।
5. पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में छात्रों की विभिन्नता का ध्यान नहीं रखा जाता है। कक्षा में विभिन्न आयु, बुद्धि स्तर विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के छात्र आते हैं।
6. उचित शिक्षण का अभाव- विद्यालयों में अध्यापक द्वारा वहीं घिसी पिटी, निरस शिक्षण विधि (पाठ्य पुस्तक पठन विधि, भाषण विधि) का इस्तेमाल किया जाता है जिस वजह से छात्र को पर्यावरण अध्ययन जैसा सजीव, सरस विषय भी निरस, बोझिल लगने लगता है।
7. अध्यापकों का प्रायोगिक कार्यों के प्रति रुझान न होना।
8. विद्यालय में संसाधनों का अभाव भी पर्यावरण अध्ययन के अध्ययन में प्रमुख बाधा है।
9. पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर कम हैं जिस कारण इस के अध्ययन से छात्र कतराते हैं।
10. सरकार द्वारा पर्यावरण अध्ययन के प्रचार-प्रसार के लिए भी उचित प्रयास नहीं किये जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

- सामूहिक विचार-विमर्श हेतु किस विधि का उपयोग किया जाता है?

- (1) स्रोत-संदर्भ विधि (2) प्रायोजना विधि
(3) समस्या विधि (4) कार्य गोष्ठी (4)

व्याख्या- सामूहिक विचार-विमर्श हेतु कार्य गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। 30-40 व्यक्ति निश्चित स्थान पर एकत्रित होते हैं तथा 4-5 दिन तक जमकर किसी विषय या समस्या पर विचार विमर्श करते हैं। कार्य गोष्ठी की प्रमुख विशेषता है कि जो व्यक्ति इसमें सम्मिलित होता है, उसे कुछ कार्य करना नितान्त आवश्यक हो जाता है। जैसे- जनसंख्या की कार्य गोष्ठी में जनसंख्या नियंत्रण के नवीन उपायों को सोचेंगे।

- पर्यटन (भ्रमण) का सामाजिक विज्ञान में महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि?

[RPSC T.EX. (III GR.)-2007]

- (1) प्रत्यक्ष अनुभव स्थायी होता है
(2) छात्रों के लिए पर्यटन मनोरंजक होता है
(3) अध्यापकों के लिए सुविधाजनक होता है
(4) छात्रों में सामाजिकता का विकास होता है

(1)

व्याख्या- भ्रमण विधि द्वारा निरीक्षण किया जाकर ज्ञानार्जन का प्रयास किया जाता है। इस विधि का मूल आधार निरीक्षण की प्रक्रिया ही है। कई वस्तुओं, प्रक्रियाओं आदि का निरीक्षण कक्षा के कमरे में करना संभव नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में बालकों को स्थान विशेष पर ले जाकर निरीक्षण योग्य बातों का निरीक्षण कराया जाता है। जैसे- फसल, नदी, झील, पंचायत घर, ऐतिहासिक भवन, डाकघर, रेलवे स्टेशन, बाँध आदि।

- सर्वप्रथम किस देश ने विद्यालय के पाठ्यक्रम में सामाजिक ज्ञान विषय को सम्मिलित किया -

- (1) भारत (2) इंग्लैंड
(3) फ्रांस (4) अमेरिका (4)

व्याख्या- अमेरिका ने सर्वप्रथम विद्यालय के पाठ्यक्रम में सामाजिक ज्ञान विषय सम्मिलित किया। सामाजिक ज्ञान विषयक परिषद् ने 1916 में इसे राजकीय मान्यता प्रदान कर दी। इससे सक्रिय, सजग व सच्चरित्र नागरिक बनाने में मदद मिली।

- अच्छे मूल्यांकन की सर्वप्रमुख विशेषता होती है-

- (1) सरलता (2) वैधता
(3) गोपनीयता (4) व्यापकता (2)

व्याख्या- वैधता मूल्यांकन की प्रमुख विशेषता है परीक्षा जिस उद्देश्य के लिए बना है। उसके परीक्षण में सफल हो तभी वह परीक्षण वैध कहलाता है। लान वेल के शब्दों में- "किसी परीक्षण की वैधता उसकी वह सीमा है जिस सीमा तक वह वही मापन करता है, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है।"

- वर्तमान युग में सबसे उपयोगी और महत्त्वपूर्ण श्रव्य-दृश्य सामग्री है-

- (1) नाटक (2) कठपुतली
(3) चलचित्र (4) टेलीविजन (4)

व्याख्या- श्रव्य-दृश्य सामग्री के अंतर्गत चलचित्र, नाटक, टेलीविजन तथा कठपुतली आदि आते हैं।

- निम्नलिखित में से कौनसी श्रव्य सामग्री नहीं है-

- (1) रेडियो (2) ग्लोब
(3) टेलीविजन (4) टेपरिकॉर्डर (2)

व्याख्या- श्रव्य उद्योतन (सहायक) सामग्री के अंतर्गत मौखिक उदाहरण, टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन, रेडियो इत्यादि आते हैं। टेलीविजन श्रव्य के साथ-साथ दृश्य सामग्री भी है।

- मूल्यांकन की विधायें हैं-

- (1) अवलोकन (2) प्रश्नावली
(3) साक्षात्कार (4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या- मूल्यांकन की प्रमुख विधायें - प्रश्नावली, पड़ताल सूची (Check list), साक्षात्कार, समाज नीति, इकाई मूल्यांकन/ परीक्षा प्रविधि, पर्यवेक्षण, संचित अभिलेख, स्तर माप (Rating Scale), घटना वृत्त प्रपत्र आदि।

➤ प्राथमिक विद्यालय में सामाजिक अध्ययन शिक्षण हेतु आप जिस शिक्षण विधि का सर्वाधिक प्रयोग करेंगे, वह है: (RPSC Sanskrit-III Grade Gen. -2008)

- (1) भाषण विधि (2) प्रदर्शन विधि
- (3) समस्या समाधान विधि
- (4) परिचर्चा विधि (2)

➤ प्रोजेक्ट प्रणाली के अनुसार अध्यापक की भूमिका-

- (1) एक मूक और शांत दर्शक की
- (2) केवल मूल्यांकन करने की
- (3) केवल मार्गदर्शन करने की
- (4) केवल प्रश्न पूछने की (3)

➤ मूल्यांकन के द्वारा जाँच की जा सकती है-

- (1) छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों की
- (2) छात्रों की रुचियों की व अभिवृत्तियों की
- (3) छात्रों की शारीरिक, मानसिक और नैतिक व सामाजिक गुणों की
- (4) उपरोक्त सभी की (4)

व्याख्या- मूल्यांकन दो शब्दों से मिलकर बना है, मूल्य+अंकन। मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति का मूल्य निश्चित किया जाता है। मूल्यांकन में छात्रों की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक गुणों को भी शामिल किया जाता है।

➤ फ्लैटिल बोर्ड को सहायक सामग्री के रूप में जिस उपयोग में लिया जाता है, वह है-

- (1) चित्रों को विस्तृत कर प्रदर्शित करने में
- (2) फिल्म स्ट्रिप को प्रदर्शित करने में
- (3) घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रदर्शित करने में
- (4) स्लाइड्स के प्रदर्शन में (1)

व्याख्या- फ्लैटिल बोर्ड अथवा खादी बोर्ड प्लाइवुड अथवा भारी कार्ड बोर्ड पर गोंद से चिपकाया हुआ फ्लैटिल अथवा खादी का कपड़ा कपड़ा होता है जो कि एक समधरातल पर चिपकाया जाता है। इसका उपयोग अध्ययन के दौरान विषय से सम्बद्ध या चित्रात्मक सामग्री के प्रदर्शन के लिए किया जाता है।

➤ सामाजिक अध्ययन शिक्षण को बाँटा जाता है-

- (1) दो भागों में (2) चार भागों में
- (3) तीन भागों में (4) पाँच भागों में (4)

व्याख्या- सामाजिक अध्ययन शिक्षण को पाँच भागों में बाँटा गया है। इतिहास, राजनीतिशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा समाज विज्ञान का अध्ययन सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत किया जाता है।

➤ छात्रों में समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जनजीवन के प्रति सौंदर्यबोध उत्पन्न करने के साधनों में से एक है-

- (1) सामुदायिक सर्वेक्षण (2) पर्यटन
- (3) ऐतिहासिक सर्वेक्षण
- (4) चलचित्र प्रदर्शन (1)

व्याख्या- सामुदायिक सर्वेक्षण द्वारा विद्यालय के विभिन्न कार्यों के प्रति रुचि विकसित की जा सकती है। साथ ही इस सर्वेक्षण द्वारा सौंदर्य बोध अभिवृत्ति भी विकसित की जा सकती है। विभिन्न समुदायों की सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थितियों की जानकारी इस सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

➤ जनसंख्या शिक्षा महत्वपूर्ण है, क्योंकि-

- (1) यह नियोजन कार्यक्रम में योगदान देती है
- (2) यह उत्पादन एवं जनसंख्या में संतुलन करने में सहयोग देती है
- (3) यह भारत की सभी समस्याओं का एक मात्र समाधान है
- (4) यह समाज कल्याण कार्यक्रम कार्यक्रम को प्रभावी बनाती है (2)

व्याख्या- जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है जो छात्रों में जनसंख्या की स्थिति, परिवार, समाज तथा देश के संदर्भ में उचित तथा उत्तरदायी दृष्टिकोण एवं व्यवहार विकसित करता है। यह शिक्षा जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक बनाकर उनमें सामाजिक आर्थिक राष्ट्रीय जीवन में संतुलन बनाये रखने की भावना जाग्रत की जाती है।

➤ किस विधा के अंतर्गत शिक्षार्थियों को कक्षाकक्ष में साधन सुविधाएँ, पुस्तकें, लेखन सामग्री, आदि की व्यवस्था उपलब्ध करायी जाती है?

- (1) परिवीक्षित अध्ययन
- (2) भ्रमण
- (3) सामाजिक अभिव्यक्ति
- (4) संग्रहालय

(1)

व्याख्या- परिवीक्षित अध्ययन भी विषय शिक्षण की एक विशिष्ट विधा है। इसका प्रयोग ऐसे विषयों में अधिक उपयोगी सिद्ध होता है, जिसमें शिक्षार्थी स्वयं भी कुछ कर सकने में सक्षम हो। इस विधा के अनुसार शिक्षार्थियों को अध्ययन के कार्य को सुचारू रूप देने के लिए अध्यापक आवश्यक साधन सुविधाएँ यथा- पुस्तकें, लेखन सामग्री, बैठक की उपयुक्त व्यवस्था आदि उपलब्ध करायी जाती है। इस विधा के अंतर्गत शिक्षार्थियों को अध्ययन संबंधी या क्रिया संबंधी करणीय कार्य बता दिये जाते हैं और समस्या आने पर अध्यापक थोड़ा-सा मार्गदर्शन करता है जिससे शिक्षार्थी के कार्य में अवरोध दूर हो जाये।

- 'चन्द्रमा और उसकी कलाओं' को स्पष्ट करने के लिए कौनसी शिक्षण विधि उपयोगी है?

- (1) अनुसंधान विधि (2) निरीक्षण विधि
- (3) समस्या विधि (4) स्रोत-संदर्भ

(2)

व्याख्या- सामाजिक विज्ञान शिक्षण में स्थान भ्रमण, मानचित्र, नमूनों का प्रदर्शन तथा चित्र वाले प्रकरण आदि में निरीक्षण विधि का उपयोग भलीभाँति किया जा सकता है। ध्यान रहे- निरीक्षण एवं भ्रमण विधि में अटूट संबंध है। थार के मरुस्थल का भ्रमण द्वारा निरीक्षण कर ज्ञान प्राप्त किया जाता है। वर्षा एवं उसके प्रकार, चन्द्रमा एवं उसकी कलाएँ, पृथ्वी की दैनिक गति, नदी के कार्य आदि प्रकरणों को निरीक्षण विधि के माध्यम से भलीभाँति स्पष्ट किये जा सकते हैं।

- प्रायोजना विधि (Project Method) का मूलधार है?

- (1) ड्यूवी की विचारधारा
- (2) बेलाई की विचारधारा
- (3) स्टीवेन्सन की विचारधारा
- (4) किलपैट्रिक की विचारधारा

(1)

व्याख्या- प्रायोजना विधि का मूलधार ड्यूवी

(डीवी) की विचारधारा है। ड्यूवी ने बालक के शिक्षण में प्रयोगात्मक विधि अपनाए जाने पर बल दिया। यह सभी विषयों की शिक्षा समन्वय द्वारा दिये जाने के पक्ष में है। ध्यान रहे- ड्यूवी के उपर्युक्त विचारों को किलपैट्रिक ने व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

- प्रायोजना विधि का जन्मदाता कहा जाता है?

- (1) ड्यूवी को (2) मॉन्टेसरी को
- (3) स्किनर को (4) किलपैट्रिक को

(4)

व्याख्या- 1918 में अमेरिकी किलपैट्रिक ने ड्यूवी की विचारधारा वाली प्रायोजना विधि की रूपरेखा सर्वप्रथम प्रस्तुत की। इन्हें ही प्रायोजना विधि का जन्मदाता माना जाता है।

- ऐसा स्थान जहाँ विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुओं का संग्रह किया जाता है, क्या कहलाता है?

- (1) फिल्मालय (2) औषधालय
- (3) संग्रहालय (4) पुस्तकालय

(3)

- प्राथमिक विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन के शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य है: (RPSC Sanskrit III Grade Gen.-2008)

- (1) राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी देना
- (2) वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की जानकारी देना
- (3) कक्षोन्नति
- (4) राष्ट्रीय चरित्र निर्माण

(4)

- शिक्षण की प्राचीन विधि है?

- (1) समस्या समाधान विधि
- (2) प्रयोगात्मक विधि
- (3) निरीक्षण विधि (4) व्याख्यान विधि

(4)

- प्रादेशिक विधि के प्रवर्तक माने जाते हैं?

- (1) हर्बर्टसन (2) किलपैट्रिक
- (3) जॉन ड्यूवी (4) स्किनर

(1)

- इकाई शिक्षण विधि के प्रवर्तक थे?

- (1) यंग (2) जॉन ड्यूवी
- (3) आर्मस्ट्रांग (4) मॉरीशन

(4)

- कहानी विधि के लिए शिक्षक को होना चाहिए?

- (1) अच्छा विद्वान

- (2) अच्छा भाषण देने वाला
(3) अच्छा कहानीकार
(4) अच्छा कवि (3)
- 'देखकर सीखना' सिद्धांत पर कौनसी विधि आधारित है?
(1) वाद-विवाद विधि
(2) व्याख्यान विधि (3) निरीक्षण विधि
(4) पाठ्य-पुस्तक विधि (3)
- प्रयोगात्मक विधि में मार्गदर्शक होता है?
(1) प्रधानाचार्य (2) छात्र
(3) प्रयोगशाला सहायक
(4) अध्यापक (4)
- अधिगम परिस्थिति का निर्माण करने का आधार है?
(1) शिक्षण विधि (2) प्रस्तुतीकरण
(3) उद्देश्य (4) मूल्यांकन (1)
- अनुसंधान विधि का विकास करने का श्रेय किसे जाता है?
(1) फ्रोबेल (2) आर्मस्ट्रांग
(3) मॉन्टेसरी (4) स्कनर (2)
- प्राथमिक कक्षा को रामायण प्रकरण पढ़ाना चाहते हैं, इसके लिए सर्वश्रेष्ठ विधि है?
(1) अनुसंधान विधि (2) भ्रमण विधि
(3) कहानी विधि (4) व्याख्यान विधि (3)
- कौनसी विधि करके सीखने पर आधारित है?
(1) व्याख्यान विधि
(2) वाद-विवाद विधि
(3) प्रायोजना विधि
(4) समस्या-समाधान विधि (3)
- छोटी कक्षाओं के लिए श्रेष्ठ विधि है?
(1) खोज विधि (2) कहानी विधि
(3) वाद-विवाद विधि (4) भाषण विधि (2)
- सामाजिक अध्ययन की सबसे सजीव और प्रभावी शिक्षण विधि है?
(1) प्रश्नोत्तर विधि (2) वाद-विवाद विधि
(3) व्याख्यान विधि (4) खेल विधि (4)
- दल शिक्षण को भारत में किस रूप में स्वीकार किया गया?
(1) नवाचार (2) अभिक्रमिit अनुदेशन
- (3) टीम टीचिंग (4) अपाचार (1)
- निम्नलिखित में से कौनसा दृश्य श्रव्य साधन है?
(1) नाटक (2) टेपरिकॉर्डर
(3) रेडियो (4) कोई नहीं (1)
- परिवीक्षित अध्ययन विधि को अन्य नामों से जाना जाता है, वे हैं?
(1) निरीक्षित अध्ययन विधि
(2) निर्देशित अध्ययन विधि
(3) उपर्युक्त दोनों
(4) इनमें से कोई नहीं (3)
- सामाजिक विज्ञान में अध्ययन किया जाता है?
(1) ऐतिहासिक घटनाओं का
(2) भौगोलिक घटनाओं का
(3) वर्तमान संदर्भ में समग्र सामाजिक विषय वस्तु का
(4) पर्यावरणीय घटनाओं का (3)
- प्रोजेक्ट विधि में-
(1) विद्यार्थी करके सीखते हैं
(2) विद्यार्थी देखकर सीखते हैं
(3) विद्यार्थी अनुभव द्वारा सीखते हैं
(4) उपर्युक्त सभी (1)
- सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र है?
(1) परिवार (2) समाज
(3) राज्य-राष्ट्र (4) उपरोक्त सभी (4)
- सामाजिक अध्ययन का संबंध है?
(1) इतिहास से (2) भूगोल से
(3) नागरिक शास्त्र से (4) उपरोक्त सभी (4)
- ज्ञान एक इकाई है, के प्रतिपादक हैं?
(1) डी.वी.जॉन (2) बिने
(3) सुकरात (4) वेस्ले (1)
- डाल्टन प्लान विधि का सूत्रपात किसने किया?
(1) डाल्टन (2) डटन
(3) यार्कहर्स्ट (4) मैकडूगल (3)
- सामाजिक अध्ययन का संबंध है-
(1) भूगोल से (2) इतिहास से
(3) नागरिक शास्त्र से (4) सभी से (4)
- अभिक्रमिक अनुदेशन में जिस शिक्षण सिद्धान्त का प्रयोग किया गया है, वह है-

- (1) स्व गति से सीखने का सिद्धान्त
(2) नियोजन का सिद्धान्त
(3) चयन का सिद्धान्त
(4) प्रयत्न व भूल का सिद्धान्त (1)
- इकाई सूचना तथा अनुभव के उस संगठन को कहते हैं जो सीखने वालों के लिए महत्त्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न करने में सक्षम है। यह कथन है-
(1) वेस्ले (2) अरस्तू
(3) डी.वी.जॉन (4) किलपैट्रिक (1)
- इकाई योजना बनाने का मूलाधार है-
(1) त्रिषय वस्तु बिन्दुओं का पारस्परिक अंतर्संबंध
(2) एक इकाई में सम्मिलित किए जाने वाले सभी बिन्दुओं का किन्हीं केन्द्रीय विचारों के प्रतिपादन में समानता लिए होना
(3) संयुक्त और संश्लिष्ट हो सकने वाले प्रसंगों या उप-प्रसंगों का एक-दूसरे को समझाने में सहायक होना
(4) उपयुक्त सभी (1)
- ग्राम्बस का इकाई सोपान है-
(1) प्रस्तावना (2) नियोजन
(3) अनुसंधान (4) उपर्युक्त सभी (4)
- करीकुलम शब्द का अर्थ है-
(1) खिलाड़ी (2) दौड़ का मैदान
(3) पाठशाला (4) शिक्षण (2)
- किस विधि में छात्र-शिक्षक के निर्देशन में कार्य करते हैं-
(1) स्वाध्याय प्रणाली
(2) शिक्षा-शिक्षक प्रणाली
(3) निर्देशित अध्ययन प्रणाली
(4) कक्षागत प्रणाली (3)
- अभिनय विधि का दूसरा नाम है-
(1) अभिनव विधि (2) नाट्य विधि
(3) नाटकीय विधि (4) उपर्युक्त सभी (4)
- प्रायोजना विधि के प्रतिपादक हैं-
(1) किलपैट्रिक (2) आर्मस्ट्रॉंग
(3) मॉरीशन (4) डी.वी.जॉन (1)
- एक प्रोजेक्ट वह उद्देश्य कार्य है जो पूर्ण निष्ठा के साथ सामाजिक वातावरण में संपन्न होता है। यह कथन है-
- (1) थॉमस तथा लैंग (2) किलपैट्रिक
(3) मॉरीशन (4) अरस्तू (2)
- दल शिक्षण का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया-
(1) भारत में (2) अमेरिका में
(3) चीन में (4) नेपाल में (2)
- दल शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है-
(1) कक्षा को अधिक प्रभावी शिक्षण प्रदान करना
(2) अध्यापकों की योग्यताओं का पूर्णतया उपयोग करना
(3) शिक्षण तथा अनुदेशन में लचीलापन लाना
(4) उपर्युक्त सभी (4)
- नाटक किस प्रकार की सहायक सामग्री है-
(1) दृश्य-श्रव्य (2) दृश्य
(3) श्रव्य (4) यांत्रिक (1)
- किसी वस्तु को मात्रा के रूप में प्रकट करने की एक प्रक्रिया को कहते हैं-
(1) मापन (2) मूल्यांकन
(3) परीक्षण (4) परिणाम (1)
- सामुदायिक स्रोतों का महत्त्व है-
(1) सामुदायिक स्रोतों से पूरक एवं अतिरिक्त ज्ञान की प्राप्ति होती है
(2) इससे छात्रों में समाजोपयोगी गुणों का विकास होता है
(3) शोध कार्य में शिक्षार्थियों के लिए सहायक होते हैं
(4) उपर्युक्त सभी (4)
- ऐतिहासिक तथ्यों का समय तथा स्थान के संदर्भ में निर्धारित किया जाना महत्त्वपूर्ण है। समय-ज्ञान तथा भूगोल इतिहास के नेत्र होते हैं। यह कथन है-
(1) स्टीवेन्सन (2) पेस्टॉलॉजी
(3) डॉ. जॉन्सन (4) किलपैट्रिक (3)
- प्रतिरूप (मॉडल) का प्रयोग निम्नलिखित कक्षा के लिए अधिक उपयोगी है-
(1) प्राथमिक कक्षा (2) माध्यमिक कक्षा
(3) उच्च कक्षा (4) कोई नहीं (1)
- सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षक में निम्न गुण होने आवश्यक हैं-
(1) सामाजिक योग्यता (2) बौद्धिक जागरूकता
(3) उदार दृष्टिकोण (4) उपरोक्त सभी (4)

**Daily Current Affairs PDF, GK
PDF and Motivational Post के
लिए हमें Follow करें**

